नवयुग के आगमन का पर्व है–महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि पर्व का बड़ा महात्म्य है। भारतीय कैलेण्डर के अनुसार फाल्गुन मास साल का अंतिम मास तथा नये साल के शुभारम्भ का समय होता है। फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। परन्तु सृष्टि के कल्प के अंत में परमात्मा के अवतरण और मनुष्यात्माओं को आत्म-ज्ञान द्वारा जागृत कर नवयुग में ले जाने तुल्य बनाना ही इस पर्व की आध्यात्मिक महत्ता है। भारत के कोने-कोने में शिवलिंग पर ओम् नमों शिवाय: के मंत्रोच्चार के बीच इस महापर्व का मनाया जाना, परमात्मा के महान कार्यों का 'शिवरात्रि' नामकरण है। शिवरात्रि पर्व केवल एक परम्परा नहीं बल्कि पुराने युग अर्थात कलियुग की विदाई और नवयुग अर्थात सतयुग के आगमन का परिचायक है।

वैसे तो प्रतिवर्ष नये साल का आगमन और पुराने वर्ष की विदाई होती है। इसी तरह नये युग का आगमन और पुराने युग की विदाई होती है। इस सृष्टि चक्र में चारों युगों को मिलाकर एक कल्प बना है। नये कल्प का आगमन तथा पुराने कल्प की विदायी के संगम पर महान परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन में मनुष्य के उत्थान और उसके पतन की कहानी का खुलासा होता है। कल्प के आदि में मनुष्यात्मायें सतोप्रधान और सोलह कला सम्पूर्ण होती हैं परन्तु धीरे-धीरे जन्म-मरण के चक्र में आते-आते कलियुग के अन्त में कलाहीन और तमोप्रधान हो जाती हैं। यहाँ पर मनुष्य का विवेक माया के अधीन हो जाता है और विकारों की अग्नि में मानवता का खात्मा होने लगता है। स्थिति तो यहाँ तक हो जाती है कि मनुष्य की श्रेष्ठ वृत्ति आसुरी वृत्ति में बदल जाती है। कल्प के आदिकाल में सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत विकारों और व्यभिचारी, अत्याचार, भ्रष्टाचार वाला भारत बन जाता है। सृष्टि चक्र के इस अविरल काल में कई ऐसी धार्मिक और आध्यात्मिक घटनायें घटती हैं जो कर्मकाण्ड और यादगारों के रूप में मनाई जाती है परन्तु सबसे बड़ी घटना शिवरात्रि के रूप में घटती है।

शिवरात्रि पर्व इसलिए मनाया जाता है कि जब पुन: नये कल्प का आरम्भ तथा पुराने के अन्त का समय आता है और मनुष्यात्मायें पतित भ्रष्टाचारी हो जाती हैं तब परमात्मा इस अज्ञानता की रात्रि में सोई मनुष्यात्माओं को जागृत कर उन्हें श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। स्थूलता में भावनाओं को अर्पित करने के लिए बनाया गया शिवलिंग परमात्मा शिव की ही प्रतिमा है। चूँकि परमपिता परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दू और निराकार है। इसलिए उसको साकार में दर्शन और पूजा करने के लिए शिवलिंग बनाया गया है। इस स्वरूप की अन्य धर्मों में भी पूजा और अर्चना की जाती है, भले ही उसे अलग-अलग नामों से जाना जाता हो। परमात्मा के सम्बन्ध में विभिन्न धर्मों में प्रचलित 'नूर', 'डिवाईन लाईट', 'ओंकार' और 'ज्योतिस्वरूप' भाषा के स्तर पर ही भिन्न है।

नवयुग से पूर्व की महारात्रि: यह तो विदित है कि नवयुग के आगमन से पूर्व कलियुग की रात्रि अर्थात महारात्रि होती है। आज दृष्टि उठाकर चारों तरफ देखिये तो पापाचार, अनाचार, अत्याचार और अज्ञानता का ही बोलबाला है। भारतीय दर्शन में ऐसे समय को घोर रात्रि की संज्ञा दी जाती है और ये विनाशकाल का ही सूचक है। **मनु ने कहा है-'आसीदिदं तमोभूतम् प्रज्ञानम् लक्षणम्'**। स्थूल में जब घोर रात्रि होती है तो रात्रिचर प्राणी और नकारात्मक प्रवृत्तियों के लोग अपने बुरे कार्यों को अंजाम देते हैं। उसमें मनुष्य के साथ की मानवता, दानवता में बदल जाती है। लोग आपस में ईर्ष्या, द्वेष और नफरत की आंधी में जल रहे होते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह के कारण मनुष्य धर्म-जाति के नाम पर खून-खराबे, बलात्कार और अपहरण जैसी

घटनायें अपने चरम पर पहुंच जाती है। यह अज्ञानता की घोर रात्रि नहीं तो और क्या है? यह परम सत्य है कि जब कोई चीज अपनी अति में हो जाती है तो अन्त अवश्यम्भावी होता है। ये सारे चिन्ह युग परिवर्तन के प्रबल संकेत होते है। इसी अज्ञानता की रात्रि में परमात्मा शिव ब्रह्मलोक से इस साकार लोक (पृथ्वी) पर साधारण मानव तन प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नयी सृष्टि की स्थापना कर नये युग का सूत्रपात करते हैं।

शिवरात्रि की सार्थकता: समय की नाजुकता को देखते हुए हमें केवल परम्परागत रूप से शिवरात्रि का पर्व मनाकर इतिश्री नहीं कर लेना चाहिए बल्कि शिवरात्रि के वास्तविक रहस्य जानकर इसे मनायें ताकि हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आये। शिवरात्रि के दिन शिवलिंग पर चढ़ाये जाने वाली वस्तुएं आध्यात्मिक रहस्यों की ओर इशारा करती है। देवी-देवताओं के मंदिरों में सदैव सुन्दर खुशबूदार फूल, पकवान आदि चढ़ाते हैं परन्तु जगतकल्याणकारी परमात्मा शिव की प्रतिमा शिवलिंग पर निरर्थक वस्तुएं क्यों चढ़ायी जाती है? इसका भी आध्यात्मिक महात्म्य है। अक का फूल देखने में सुन्दर होता है परन्तु उसमें खूशबू नहीं होती, बेलपत्र किसी भी फूल की श्रेणी में नहीं आता, भांग श्रेष्ठ और संयमी मनुष्यों का आहार नहीं है। जो मनुष्य के लिए उपयुक्त नहीं है वह भगवान पर भला कैसे चढ़ाया जा सकता है। इनका अर्थ है कि आज जो मनुष्यों के अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि बुराइयां हैं जिससे मनुष्य स्वयं तो दुखी होता ही है परन्तु दूसरों को भी दु:खी करता है। इनको परमात्मा के ऊपर अर्पण कर परमात्मा शिव भोलेनाथ से सदगुणों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लें। परमात्मा ने कलियुग के अन्त में परमधाम से इस धरा पर आकर हम सभी मनुष्यात्माओं से यही मांगा था कि तुम मुझे अपनी बुराइयां दो और मैं तुम्हें सदगुणों और ईश्वरीय शक्ति से भरपूर कर दूंगा।

परमात्मा शिव इतने दयालु और कृपालु हैं कि वे हमारी बुराई को मांगकर सदगुण, सुख और शान्ति प्रदान करते हैं। इसलिए शास्त्रों में इनको दिखाया गया है कि राक्षस भी जब तपस्या करते थे तब वे प्रसन्न हो जाया करते थे। इसका अर्थ यही है कि आज मनुष्य आसुरी प्रवृत्तियों के कारण असुर समान बनता जा रहा है। अब पुन: परमात्मा अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा नर को नारायण और नारी को लक्ष्मी बनाने का महान कार्य कर रहे हैं।

नवयुग आगमन की आहट: आज विकारों में तो दुनियां जल ही रही है साथ-साथ आज विनाश के कगार पर पूरी भी खड़ी है। प्राकृतिक आपदाओं में ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता खतरा, परमाणु और हाईड्रोजन बमों का बढ़ता जखीरा, आतंकवादियों के खराब मंसूबे आदि किसी भी समय दुनिया को विध्वंस करने की क्षमता रखते हैं। यह कलियुग के अन्त का समय है जब परमात्मा आकर गुप्त रूप में नयी दुनियां की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए ज्ञान के पट खोल अज्ञानता को दूर भगाइये और परमात्मा को पहचान सच्ची शिवरात्रि मनाइये। यही परमात्मा शिव का संदेश है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com